

春秋公羊傳譯注

上

劉尚慈 譯注

中國古典名著譯注叢書



中華書局

春秋公羊傳譯注

上

劉尚慈

譯注

中國古典名著譯注叢書

中華書局

圖書在版編目(CIP)數據

春秋公羊傳譯注/劉尚慈譯注. - 北京: 中華書局,
2010.5

(中國古典名著譯注叢書)

ISBN 978 - 7 - 101 - 07072 - 9

I. 春… II. 劉… III. ①中國 - 古代史 - 春秋時代
- 史籍②公羊傳 - 譯文③公羊傳 - 注釋 IV. K225.04

中國版本圖書館 CIP 數據核字(2009)第 186305 號

責任編輯：賈元蘇

中國古典名著譯注叢書

春秋公羊傳譯注

(全二冊)

劉尚慈 譯注

*

中華書局出版發行

(北京市豐臺區太平橋西里 38 號 100073)

<http://www.zhbc.com.cn>

E-mail: zhbc@zhbc.com.cn

北京瑞古冠中印刷廠印刷

*

850×1168 毫米 1/32 · 22½印張 · 4 插頁 · 500 千字

2010 年 5 月第 1 版 2010 年 5 月北京第 1 次印刷

印數: 1 - 3000 冊 定價: 56.00 元

ISBN 978 - 7 - 101 - 07072 - 9

凡例

一、《春秋公羊傳譯注》以 1980 年中華書局影印阮元校勘《十三經注疏》之《春秋公羊傳》為底本，以春秋十二公先後次第為各篇章標題。各公首頁名號後括注其在位公元紀年的起訖，附注其在底本中的卷次起訖。各公之下，一年作為一個單元。每一年中再分節。每一節原文之後括注其在底本中的頁碼及欄位，以方便讀者。

二、解經是本書的側重點。《譯注》除了在古漢語字詞的注釋上下功夫外，更著力於其經義的闡發和詮釋。

1. 原文悉依底本。誤字、衍文以“（ ）”標記，奪字、校正的字以“[]”標記。

2. 譯文以直譯為原則。譯文中加“（ ）”者，是譯注者為方便讀者理解而補釋的文字。

3. 注釋力求全面。關於經義的緊要處則根據公羊家的觀點給予較詳的疏解，必要時摘引古文經籍的說法以資相互印證，間亦略陳己見。《春秋》以史說法、借事明義，但其史實記錄過于簡略，必要時注釋將據《左傳》等略作補充。

三、關於互見參見等的處理：

1. 魯公在本篇之內只于首見時出注，在其他篇章中則出互見條。
2. “盟”在首見處設主條，在諸公第一次結盟時出互見注，意在提示，此外不出互見注。
3. 同一位諸侯，無論稱謂如何，詞條互見，以彰示其書例微言。
4. 卿大夫均在首見處設主條。
5. “參見”條是內容相關有互補作用的條目。

四、原文以忠于底本字形為原則，屬於刻工誤筆、避諱字的則徑予改正。譯文、注釋則採用國家有關部門規定的新字形、規範字等。

傳世先秦古籍中，“于”“於”多混用無別，但本書經典正文中的“于”“於”悉依底本，譯文和注釋中則不加區分。

目 錄

凡例 (1)

隱公(公元前 722—前 712 年)

| | |
|-------|------|
| 隱公元年 | (1) |
| 隱公二年 | (12) |
| 隱公三年 | (19) |
| 隱公四年 | (26) |
| 隱公五年 | (31) |
| 隱公六年 | (37) |
| 隱公七年 | (39) |
| 隱公八年 | (43) |
| 隱公九年 | (46) |
| 隱公十年 | (48) |
| 隱公十一年 | (50) |

桓公(公元前 711—前 694 年)

| | |
|------|------|
| 桓公元年 | (53) |
| 桓公二年 | (55) |
| 桓公三年 | (60) |
| 桓公四年 | (64) |
| 桓公五年 | (66) |
| 桓公六年 | (70) |

| | |
|-------|------|
| 桓公七年 | (73) |
| 桓公八年 | (74) |
| 桓公九年 | (77) |
| 桓公十年 | (79) |
| 桓公十一年 | (80) |
| 桓公十二年 | (85) |
| 桓公十三年 | (87) |
| 桓公十四年 | (89) |
| 桓公十五年 | (92) |
| 桓公十六年 | (96) |
| 桓公十七年 | (97) |
| 桓公十八年 | (99) |

莊公(公元前 693—前 662 年)

| | |
|-------|-------|
| 莊公元年 | (102) |
| 莊公二年 | (107) |
| 莊公三年 | (109) |
| 莊公四年 | (111) |
| 莊公五年 | (116) |
| 莊公六年 | (117) |
| 莊公七年 | (120) |
| 莊公八年 | (122) |
| 莊公九年 | (124) |
| 莊公十年 | (128) |
| 莊公十一年 | (131) |
| 莊公十二年 | (132) |
| 莊公十三年 | (135) |
| 莊公十四年 | (138) |

| | |
|-------------|-------|
| 莊公十五年..... | (139) |
| 莊公十六年..... | (140) |
| 莊公十七年..... | (141) |
| 莊公十八年..... | (143) |
| 莊公十九年..... | (144) |
| 莊公二十年..... | (146) |
| 莊公二十一年..... | (147) |
| 莊公二十二年..... | (148) |
| 莊公二十三年..... | (151) |
| 莊公二十四年..... | (154) |
| 莊公二十五年..... | (158) |
| 莊公二十六年..... | (161) |
| 莊公二十七年..... | (163) |
| 莊公二十八年..... | (167) |
| 莊公二十九年..... | (170) |
| 莊公三十年..... | (171) |
| 莊公三十一年..... | (173) |
| 莊公三十二年..... | (175) |

閔公(公元前 661—前 660 年)

| | |
|-----------|-------|
| 閔公元年..... | (180) |
| 閔公二年..... | (183) |

僖公(公元前 659—前 627 年)

| | |
|-----------|-------|
| 僖公元年..... | (188) |
| 僖公二年..... | (194) |
| 僖公三年..... | (200) |
| 僖公四年..... | (202) |

| | |
|-------------|-------|
| 僖公五年..... | (207) |
| 僖公六年..... | (210) |
| 僖公七年..... | (211) |
| 僖公八年..... | (213) |
| 僖公九年..... | (216) |
| 僖公十年..... | (218) |
| 僖公十一年..... | (222) |
| 僖公十二年..... | (223) |
| 僖公十三年..... | (224) |
| 僖公十四年..... | (225) |
| 僖公十五年..... | (227) |
| 僖公十六年..... | (231) |
| 僖公十七年..... | (233) |
| 僖公十八年..... | (235) |
| 僖公十九年..... | (237) |
| 僖公二十年..... | (239) |
| 僖公二十一年..... | (241) |
| 僖公二十二年..... | (245) |
| 僖公二十三年..... | (247) |
| 僖公二十四年..... | (249) |
| 僖公二十五年..... | (250) |
| 僖公二十六年..... | (253) |
| 僖公二十七年..... | (256) |
| 僖公二十八年..... | (257) |
| 僖公二十九年..... | (265) |
| 僖公三十年..... | (266) |
| 僖公三十一年..... | (268) |
| 僖公三十二年..... | (273) |

僖公三十三年..... (274)

文公(公元前 626—前 609 年)

| | |
|------------|-------|
| 文公元年..... | (280) |
| 文公二年..... | (282) |
| 文公三年..... | (287) |
| 文公四年..... | (289) |
| 文公五年..... | (291) |
| 文公六年..... | (293) |
| 文公七年..... | (295) |
| 文公八年..... | (298) |
| 文公九年..... | (300) |
| 文公十年..... | (305) |
| 文公十一年..... | (306) |
| 文公十二年..... | (308) |
| 文公十三年..... | (312) |
| 文公十四年..... | (316) |
| 文公十五年..... | (322) |
| 文公十六年..... | (325) |
| 文公十七年..... | (327) |
| 文公十八年..... | (329) |

宣公(公元前 608—前 591 年)

| | |
|-----------|-------|
| 宣公元年..... | (331) |
| 宣公二年..... | (336) |
| 宣公三年..... | (337) |
| 宣公四年..... | (340) |
| 宣公五年..... | (342) |

| | |
|-------|-------|
| 宣公六年 | (343) |
| 宣公七年 | (348) |
| 宣公八年 | (349) |
| 宣公九年 | (353) |
| 宣公十年 | (356) |
| 宣公十一年 | (359) |
| 宣公十二年 | (361) |
| 宣公十三年 | (366) |
| 宣公十四年 | (367) |
| 宣公十五年 | (368) |
| 宣公十六年 | (375) |
| 宣公十七年 | (377) |
| 宣公十八年 | (378) |

成公(公元前 590—前 573 年)

| | |
|-------|-------|
| 成公元年 | (381) |
| 成公二年 | (383) |
| 成公三年 | (388) |
| 成公四年 | (392) |
| 成公五年 | (393) |
| 成公六年 | (395) |
| 成公七年 | (398) |
| 成公八年 | (400) |
| 成公九年 | (404) |
| 成公十年 | (407) |
| 成公十一年 | (409) |
| 成公十二年 | (410) |
| 成公十三年 | (411) |

| | |
|------------|-------|
| 成公十四年..... | (413) |
| 成公十五年..... | (414) |
| 成公十六年..... | (420) |
| 成公十七年..... | (425) |
| 成公十八年..... | (429) |

襄公(公元前 572—前 542 年)

| | |
|-------------|-------|
| 襄公元年..... | (433) |
| 襄公二年..... | (435) |
| 襄公三年..... | (438) |
| 襄公四年..... | (440) |
| 襄公五年..... | (441) |
| 襄公六年..... | (445) |
| 襄公七年..... | (447) |
| 襄公八年..... | (450) |
| 襄公九年..... | (452) |
| 襄公十年..... | (453) |
| 襄公十一年..... | (456) |
| 襄公十二年..... | (459) |
| 襄公十三年..... | (461) |
| 襄公十四年..... | (462) |
| 襄公十五年..... | (463) |
| 襄公十六年..... | (465) |
| 襄公十七年..... | (468) |
| 襄公十八年..... | (469) |
| 襄公十九年..... | (470) |
| 襄公二十年..... | (474) |
| 襄公二十一年..... | (476) |

| | |
|--------|-------|
| 襄公二十二年 | (478) |
| 襄公二十三年 | (479) |
| 襄公二十四年 | (482) |
| 襄公二十五年 | (485) |
| 襄公二十六年 | (488) |
| 襄公二十七年 | (490) |
| 襄公二十八年 | (494) |
| 襄公二十九年 | (495) |
| 襄公三十年 | (501) |
| 襄公三十一年 | (504) |

昭公(公元前 541—前 510 年)

| | |
|-------|-------|
| 昭公元年 | (506) |
| 昭公二年 | (511) |
| 昭公三年 | (512) |
| 昭公四年 | (513) |
| 昭公五年 | (516) |
| 昭公六年 | (519) |
| 昭公七年 | (520) |
| 昭公八年 | (522) |
| 昭公九年 | (524) |
| 昭公十年 | (525) |
| 昭公十一年 | (527) |
| 昭公十二年 | (531) |
| 昭公十三年 | (533) |
| 昭公十四年 | (537) |
| 昭公十五年 | (538) |
| 昭公十六年 | (540) |

| | |
|-------------|-------|
| 昭公十七年..... | (542) |
| 昭公十八年..... | (543) |
| 昭公十九年..... | (544) |
| 昭公二十年..... | (546) |
| 昭公二十一年..... | (548) |
| 昭公二十二年..... | (550) |
| 昭公二十三年..... | (553) |
| 昭公二十四年..... | (557) |
| 昭公二十五年..... | (558) |
| 昭公二十六年..... | (565) |
| 昭公二十七年..... | (567) |
| 昭公二十八年..... | (569) |
| 昭公二十九年..... | (570) |
| 昭公三十年..... | (571) |
| 昭公三十一年..... | (572) |
| 昭公三十二年..... | (577) |

定公(公元前 509—前 495 年)

| | |
|-----------|-------|
| 定公元年..... | (580) |
| 定公二年..... | (584) |
| 定公三年..... | (586) |
| 定公四年..... | (587) |
| 定公五年..... | (593) |
| 定公六年..... | (595) |
| 定公七年..... | (596) |
| 定公八年..... | (598) |
| 定公九年..... | (604) |
| 定公十年..... | (605) |

| | |
|------------|-------|
| 定公十一年..... | (608) |
| 定公十二年..... | (609) |
| 定公十三年..... | (612) |
| 定公十四年..... | (614) |
| 定公十五年..... | (617) |

哀公(公元前 494—前 481 年)

| | |
|-----------------|-------|
| 哀公元年..... | (622) |
| 哀公二年..... | (623) |
| 哀公三年..... | (625) |
| 哀公四年..... | (629) |
| 哀公五年..... | (632) |
| 哀公六年..... | (633) |
| 哀公七年..... | (637) |
| 哀公八年..... | (638) |
| 哀公九年..... | (640) |
| 哀公十年..... | (641) |
| 哀公十一年..... | (643) |
| 哀公十二年..... | (645) |
| 哀公十三年..... | (647) |
| 哀公十四年..... | (650) |
| 《春秋公羊傳》概述 | (655) |

隱公(公元前 722—前 712 年)

(卷第一—卷第三)

隱公元年(公元前 722 年)

原文(隱 1·1)

(經)元年，春，王正月^①。

(傳)元年者何？君之始年也。春者何？歲之始也。王者孰謂？謂文王也^②。曷爲先言王而後言正月？王正月也。何言乎王正月？大一統也^③。公何以不言即位^④？成公意也^⑤。何成乎公之意？公將平國而反之桓^⑥。曷爲反之桓？桓幼而貴，隱長而卑。其爲尊卑也微，國人莫知^⑦。隱長又賢，諸大夫扳隱而立之^⑧。隱於是焉而辭立，則未知桓之將必得立也；且如桓立，則恐諸大夫之不能相幼君也。故凡隱之立，爲桓立也。隱長又賢，何以不宜立？立適以長不以賢，立子以貴不以長^⑨。桓何以貴？母貴也。母貴則子何以貴？子以母貴，母以子貴^⑩。(2196 上—2197 下)

譯文

(經)(隱公)元年，春，周曆正月。

(傳)元年是什麼？國君即位起始的年份。春是何意？一年的開始。王指誰？指的是周文王。為什麼先說王而後說正月？這是周文王正朔的正月。為什麼要說王正月？強調天下總繫于周之一統。(隱)公爲何不言即位？成全(隱)公的初衷。怎麼是成全(隱)公的初衷？(隱)公將把國家治理安定，然後把君位還給桓公。為什麼要還給桓

公？桓公年幼而身分尊貴，隱公年長而身分卑微。他們之間的尊卑貴賤的差異小，國人並不知情。隱公年長又賢德，大夫們擁戴而立他為君主。如果隱公在這個時候拒絕即位為國君，那麼桓公將來是否一定能即位就未可知了。況且如果桓公這個時候即位為君，則又擔心卿大夫們不能真心輔佐幼主。所以總起來說，隱公之所以即位，全是由於桓公將來能立為君。隱公年長又賢德，為什麼不宜立為君主？（依照禮法）立嫡子憑年齒，不憑賢能；立庶子按身分貴賤，不按年齒長幼。桓公為什麼身分尊貴呢？他母親的身分尊貴。母親尊貴那兒子為什麼就尊貴？兒子憑藉母親身分尊貴而尊貴，母親憑藉兒子地位尊貴而尊貴。

注釋

①【王正月】指周曆正月。此王指周文王。義為周文王受天命而王天下，改正(zhēng)建子。周之禮制創自文王而成于武王、周公，故言文王實以統武王、周公。帝王易代，莫不改正朔，如夏朝建寅，以孟春月為正月；殷朝建丑，以季冬月為正月；周朝建子，以仲冬月為正月。《史記·曆書》：“夏正以正月，殷正以十二月，周正以十一月。蓋三王之正若循環，窮則反本。天下有道，則不失紀序；無道，則正朔不行於諸侯。”《春秋》強調並尊崇一統，奉行周文王正朔。“王正月”在《春秋》中出現97次。

②【文王】周文王，姬姓，名昌，謚文。殷末周族領袖，曾被殷紂囚於羑里，後獲釋。有盛德，為諸侯所擁戴，為西伯（西方諸侯之長），建立豐邑為國都。在位五十年，國勢強盛，“改法度，制正朔”，為其子周武王討紂滅殷、建立周王朝奠定了基礎。周王朝建立，繼續遵奉文王之法度、正朔。

③【大一統】尊崇周室的一統天下。大，崇尚、重視、強調。一，純一，不雜。一統，指天下總繫於一，總攝於一。“一統”是植根於孔子世界大同理想的一個社會意識形態：溥天之下，土地人民，定於一尊之王；王室諸侯、上下內外、政治制度、禮儀教化，始於一、歸於一的王道政治。本傳以“大一統”來解釋《春秋》經文“王正月”。周禮，天子每年十二月“頒告朔于邦國”（《周禮·春官·大史》），把第二年的曆書、每月的政令，佈告天下諸侯。除了依禮二王後可服其服，行其礼